ग्राम-भारत ऊर्जा स्वावलम्बन

ग्रामऊर्जा सॉल्यूशन्स प्राइवेट लिमिटेड वर्ष 2008 ई. से अपारंपरिक ऊर्जा साधनों का उपयोग कर गाँवों तथा गाँवों में कार्यरत संस्थाओं को ऊर्जा स्वावलम्बी होने में सहायता कर रही है। जिन गाँवों में अभी तक बिजली नहीं पहुंची है उनमें सौरऊर्जा आधारित माइक्रो-ग्रिड प्रोजेक्ट, भोजन पकाने के लिये बायोगैस का उत्पादन और सामूहिक उपयोग हेतु बायोगैस वितरण के लिये ग्रिड, खेती और पीने के पानी के लिये सौर पंप आदि प्रकल्प ग्राम ऊर्जा द्वारा चलाये जाते हैं।

प्रकल्प लम्बे समय तक सुचारु रूप से चले, इसके लिये गाँव तथा वहाँ की संस्थाओं की ऊर्जा आवश्यकता, प्रकल्प संचालन के लिये आवश्यक तकनीकी ज्ञान, उनकी आर्थिक क्षमता एवं मानसिकता का ध्यान प्रारंभ से ही रखना होता है। प्रकल्प की परिकल्पना, संस्थापन एवं नियोजन, स्थानीय स्तर पर समिति का गठन, उपभोग की हुई ऊर्जा का मापन, शुल्क निर्धारण और उसका संग्रहण, बैंक खाते का संचालन तथा भविष्य में प्रकल्प संबंधी व्यय हेतु प्रावधान करने जैसे विषयों में ग्राम ऊर्जा सहायता करती है।

महाराष्ट्र में पुणे जिले की जुन्नर तहसील के दरेवाड़ी गाँव में जुलाई 2012 में ग्राम ऊर्जा ने सौर ऊर्जा आधारित माइक्रोग्रिड प्रोजेक्ट प्रारंभ किया। इस प्रकल्प के अंतर्गत गाँव में स्थित सभी 39 घरों को बिजली की आपूर्ति की गयी। घरों में प्रकाश हेतु एलईडी बल्ब, आटा चक्की, पीने और खेती के पानी के लिये पंप, स्ट्रीट लाइट तथा कुछ घरों में टेलीविजन के लिये भी इस बिजली का उपयोग होता है। ग्रामीणों द्वारा स्थापित समिति हर माह बिजली का शुल्क उपभोक्ताओं से एकत्र कर समिति के बैंक खाते में जमा कराती है। इस राशि का उपयोग प्रकल्प संचालन एवं प्रबंधन के लिये किया जाता है। ऐसा ही एक प्रकल्प कर्नाटक के विरल गाँव में संचालित किया जा रहा है। सौर उपकरणों के उपयोग तथा उनके संचालन का प्रशिक्षण गाँव के ही युवकों को दिया जाता है। ग्रामीणों का जीवनस्तर ऊंचा हो तथा रोजगार के अवसर उत्पन्न हों यह इन प्रकल्पों के संस्थापन तथा संचालन के पीछे का उद्देश्य है।

जिन गाँवों में बिजली है किन्तु खेती और पीने के पानी के पंप चलाने के लिये बिजली उपलब्ध नहीं है ऐसी जगहों पर सौर ऊर्जा से संचालित पंप लगाये जा सकते हैं। महाराष्ट्र के पालघर जिले की जव्हार तहसील में कार्यरत सामाजिक संस्था प्रगति प्रतिष्ठान के साथ 31 गाँवों में ऐसे सोलर पंप लगाये गये हैं। सौर पंपों द्वारा 5 हजार से 1 लाख लीटर पानी प्रतिदिन प्राप्त किया जाता है। पानी को 100 फीट तक ऊपर उठाया जाता है। कुछ अन्य सामाजिक संस्थाओं तथा ग्रामीण पाठशालाओं के लिये सौर ऊर्जा पर आधारित छोटे परन्तु कार्यक्षम प्रकल्प ग्रामऊर्जा ने लगाये हैं।

गाँवों में भोजन पकाने के लिये अधिकांश लकड़ी, कोयला अथवा मिट्टी के तेल का प्रयोग ईंधन के रूप में होता है। बायोगैस इन ईंधनों का अच्छा विकल्प है। ग्रामऊर्जा द्वारा गाँवो में सामूहिक

बायोगैस प्रकल्प का निर्माण कर घरों में पाइपलाइन द्वारा गैस पहुंचाने की व्यवस्था की गयी है। महाराष्ट्र के कोलवन गाँव में जी.आई.जेड। नामक जर्मन कम्पनी के साथ ऐसा ही एक प्रकल्प ग्रामऊर्जा ने प्रारंभ किया है। गौशालाओं में बायोगैस तैयार कर उसका औद्योगिक उपयोग भी किया जा सकता है। ग्रामऊर्जा सभी आकार के ऐसे संयंत्र स्थापित करती है।

ग्रामऊर्जा ने महाराष्ट्र, कर्नाटक, मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश, ओडिशा, झारखण्ड, तथा राजस्थान इन प्रदेशों का विस्तृत सर्वेक्षण किया है तथा इन राज्यों में स्थानीय स्तर पर अपारंपरिक ऊर्जा उत्पादन और वितरण के प्रकल्प प्रारंभ कर रही है। ग्रामीण क्षेत्रों में ऊर्जा स्वावलंबन के लिये ग्रामऊर्जा प्रगति प्रतिष्ठान, संजीवनी सेवा ट्रस्ट सहित अनेक सामाजिक गैरसरकारी संगठनों के साथ मिलकर ग्राम विकास के क्षेत्र में योगदान कर रही है।

अधिक जानकारी के लिये संपर्क करें -

ग्रामऊर्जा सॉल्यूशन्स प्राइवेट लिमिटेड

एन सी एल इनोवेशन पार्क, पाषाण, पुणे - 411008

दूरभाष - 020-64001402

ईमेल - office@gramoorja.in